Vol 6 Issue 11 Dec 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

''भारतीय परिवेश में जनसंचार का विकास एवं सामाजिक परिवर्तन'' (मानविकी)

रचना सक्सेना (कुलश्रेष्ठ)
सहायक प्रोफेसर , पीपल्स पत्रकारिता शिक्षण संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

मानविकी वे शैक्षणिक विषय हैं जिनमें प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों के मुख्यतः व्यवहारिक दृष्टिकोण मुख्य रूप से विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक विधियों का इस्तेमाल कर मानवीय स्थिति का अध्ययन किया जाता है।

प्राचीन और आधुनिक भाषाएं, साहित्य, कानून, इतिहास, दर्शन, धर्म और दृश्य एवं अभिनय कला (संगीत सहित) मानविकी संबंधी विषयों के उदाहरण हैं। इसके साथ ही मानविकी में शामिल किये जाने वाले अतिरिक्त विषय हैं, संचार अध्ययन (कम्युनिकेशन स्टडीज), प्रौद्योगिकी (टेक्नोलहजी), मानव-शास्त्र (एन्थ्रोपोलहजी), क्षेत्र अध्ययन (एरिया स्टडीज), सांस्कृतिक अध्ययन (कल्चरल स्टडीज) और भाषा विज्ञान (लिंग्विस्टिक्स)।

अतः मै संचार अध्ययन (कम्युनिकेशन स्टडीज) के अतर्गत ''भारतीय परिवेश में जनसंचार का विकास एवं सामाजिक परिवर्तन'' विषय पर यह शोध अध्ययन प्रस्तुत करती हूँ।

भारतीय परिवेश में जनसंचार का विकास एवं सामाजिक परिवर्तन

प्रथम अध्याय

उद्देश्य : इस शोध के माध्यम से मेरा उद्देश्य यह जानना है कि भारतीय समाज में मीडिया के विकास के साथ-साथ इसने भारतीय सामाजिक परिवेश को किस प्रकार प्रभावित किया है तथा इसके माध्यम से किस प्रकार एवं कितना परिवर्तन

हुआ है। यह परिवर्तन समाज के किस भाग में अधिक प्रभावशील है। इस प्रभावशीलता का प्रभाव सूचना एवं प्रसारण तथा उसकी ग्रहणशीलता पर सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। इसमें परिवर्तन आने का सबसे बड़ा कारण सूचना प्रसारण के संसाधनों का विस्तार है। जिसका परिणाम यह है कि यह वृहद समाज सूचना प्रौद्योगिकी के परिणाम स्वरूप संकुचित होकर भूमंडलीय आधार पर एक केन्द्र में संचालित हो गया है। जिससे तेज गति से दौड़ रही मानव जीवन की व्यस्तता के बाद भी एक मनुष्य संपूर्ण समाज से ऐसे जुड़ा हुआ है कि उसे अतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, क्षैत्रिय, स्थानीय गतिविधियों के साथ ही पारिवारिक सदस्य मित्र के साथ ही किसी दूसरे क्षेत्र में बैठा बचपन का मित्र सबसे संबंधित सूचना एवं व्यवहार से जुड़ा हुआ है कि मानों हर तरह की पल-पल की जानकारी मुट्ठी में हर पल समेटे जा रहा है।

विगत कुछ समय पूर्व चेन्नई में आई भारी तेज बारिश ने जहां तमिलनाडू को बुरी तरह से हिला दिया, वहीं मीडिया के विकास तथा इसके उपयोग ने इस तेज बारिश से हुई भारी तबाही से चेन्नई को पूरे देशवासियों साथ मिलकर उससे लड़ने और उसे हराने का पूरा हौसला भी दिया है। इस तबाही से पूरा देश मास तथा सोशल मीडिया के माध्यम से एक जुट होकर हर संभव मदद के लिए आगे आया है।

उपकल्पना :

समाज एवं समाज में होने वाले परिवर्तन का मुख्य आधार उस समाज में उपयोग किये जाने वाले संसाधन तथा सूचना एवं जानकारी देने तथा प्राप्त करने के साधनों का विकास तथा विस्तार है।

प्रस्तावना :

मानव सभ्यता के विकास में सबसे पहला अविष्कार क्या था यह कहना तो कठिन है परंतु आग पैदा करने के अविष्कार तथा उसके उपयोग से निश्चित ही मानव के समाज में रहने के तौर तरीकों में बदलाव आया। वहीं संचार विकास के अंतर्गत तुच्छ विचार विनिमय से लेकर शास्त्रार्थ एवं जनसंचार सब आते है। संचार का यहीं विकास मानव सभ्यता के विकास तथा जीवन शैली के परिवर्तन का मुख्य आधार है।

अडंर स्टेडिंग मीडिया के लेखक मार्शल मेकलूहान के अनुसार '' नये तथा शक्तिशाली माध्यम के अविष्कार से किसी भी समाज की पुरानी परंपराये ध्वस्त हो जाती है।'' मेकलूहान के अनुसार '' अठारहवीं सदी में फ्रांस की क्रांति में छापाखाने के अविष्कार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उत्तर से दक्षिण तक फ्रांसीसी एक ही तरह के लोग थे लेकिन समानता, निरंतरता तथा पंरपरा के छपे हुए सिद्धांतों ने समाज की दिशा को बदल दिया। यह छिपा हुआ शब्द ही था जिसने फ्रांस की क्रांति की शुरूआत की।'' किस माध्यम के विकास से क्या क्या परिवर्तन हुए यहां मार्शल मेकलूहान तथा जोसेफ क्लेपर के विचारों की भिन्नता का उल्लेख करना उचित होगा। मार्शल मेकलूहान के अनुसार ''माध्यम का अविष्कार क्रांतिकारी परिवर्तन लाता है।'' जबकि जोसेफ् क्लेपर के अनुसार सामाजिक मूल्यों तथा विचारों में वृद्धि होती है। यदि जोसेफ क्लेपर के विचारों को ही मान लिया जाये तो वृद्धि या प्रेरणा भी एक तरह का परिवर्तन ही है।

मानव के जीवन में संचार मानव सभ्यता, विकास परिवर्तन एवं जीवंतता का एक अपरिहार्य आधार है। मानव जीवन तथा संचार एक दूसरे के पर्याय ही तो है यदि मानव जीवन की विकास की प्रांरभिक अवस्था पर नजर दौड़ाये तो मनुष्य अपनी आरंभिक अवस्था में अपनी भाव भंगिमाओं, संकेतों

तथा प्रतीक चिन्हों से संचार करता था। यही संचार का विकास क्रम जो क्रमशः बोली, लेखन कला के साथ विकसित होते हुए प्रिंट माध्यम, टेलीकॉम, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, टेलीफोन, मोबाइल फैक्स इंटरनेट, ई मेल, वेब पोर्टल्स, टेलीप्रिन्टर, टेलेक्स, इंटरकॉम, टेलीटेक्स, टेली कांन्फ्रेन्स, केबल, सोशल नेटवर्किंग साइट्स के द्वारा इस जनसंख्या तथा क्षेत्राधार पर वृहद विकसित समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन के दौर में मानव सभ्यता को ला खड़ा कर दिया है।

द्वितीय अध्याय

मीडिया का विकास विकास के संदर्भ में यदि बात कि जाये तो हम मानव सभ्यता के विकास को देखे तो पाषाण काल में मानव व उनका रहन सहन तथा किन साधनों को किस प्रकार प्रयोग करते थे यह देखे तो यह इस प्रकार प्रतीत होता है कि पाषाण युग में पाषाण युग से तात्पर्य ऐसे काल से है जब लोग पत्थरों पर आश्रित थें। पत्थर के औजार, पत्थर की गुफा ही उनके जीवन के प्रमुख आधार थे। यह मानव सभ्यता के आरंभिक काल में से है जब मानव की आज की तरह विकसित नहीं था। इस काल में मानव प्राकृतिक आपदाओं से जूझता रहता था। और शिकार तथा कन्द मूल फल खाकर अपना जीवन बसर करता था।

संचार का इतिहास प्रागैतिहासिक काल से आरंभ होता है। संचार के अतंर्गत तुच्छ विचार विनिमय से लेकर शास्त्रार्थ एवं जनसंचार सब आते है। कोई २००.००० वर्ष पूर्व मानव प्राणी के प्रादुर्भाव के साथ मानव संचार में एक क्रांति आयी थी। लगभग ३०.००० वर्ष पूर्व प्रतीकों का विकास हुआ एवं लगभग ७००० ईसापूर्व लिपी और लेखन का विकास हुआ। इनकी तुलना में पिछली कुछ शताब्दियों में ही दूरसंचार के क्षेत्र में बहुत अधिक विकास हुआ है।

चित्रलिपी भावचित्रों को अंग्रेजी में ''इडियोग्रैम Ideogram या इडियोग्रैफ पकमवहतंची कहते है। चित्रलिपी को ideograph script या pictographic script कहा जाता है।

मानव जीवन में जीवान्तता के लिए संचार का होना आवश्यक ही नहीं, अपितु अपिहार्य है। पृथ्वी पर संचार का उद्भव मानव सभ्यता के साथ माना जाता है। प्रांरभिक युग का मानव अपनी भाव भंगिमाओं, व्यवहारजन्य संकेतों और प्रतीक चिन्हों के माध्यम से संचार करता था, किन्तु आधुनिक युग में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांतिकारी अनुसंधान के कारण मानव संचार बुलन्दी पर पहुंच गया है। वर्तमान में रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, टेलीफोन, मोबाइल, फैक्स, इंटरनेट, ईमेल, वेब पोर्टल्स, टेलीप्रिन्टर, टेलेक्स, इंटरकॉम, टेलीटैक्स, टेली कॉन्फ्रेंसिंग, केबल सोशल नेटवर्किंग साइट्स, समाचार पत्र, पत्रिका इत्यादि मानव संचार के अत्याधुनिक और बहुचर्चित माध्यम है तथा भारतीय सामाजिक परिवेश में बहुत अधिक उपयोग किये जाने वाले संचार माध्यमों में टेलीविजन रेडियो सिनेमा मंचन सभा गोष्ठि समाचार पत्र पत्रिका मोबाइल फोन्स सोशल मीडिया इंटरनेट आदि है। आज भारत विश्व का सबसे बड़ा समाचार पत्र बाजार है यहां पर लगभग ७०००० से अधिक समाचार पत्र तथा ६९० उपग्रह चैनल्स है।

भारत में मीडिया के विकास को देखे तो पन्द्रहवीं एवं सोलहवीं शताब्दी में प्रिटिंग प्रेस आने का कारण ईसाई मिशनरी का धार्मिक साहित्य को प्रकाशित करना था। भारतवर्ष में पहला समाचार पत्र बंगाल ग़जट २९ जनवरी १७८० में एक अंग्रेज जेम्स ऑगस्ट हिकी ने निकाला। इसके बाद उन्नीसवीं सदी के दूसरे दशक में कलकत्ता के पास श्रीरामपुर के मिशनरियों ने और तीसरे दशक में राजा राममोहन रॉय ने साप्ताहिक मासिक और द्वैमासिक पत्र- पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रांरभ किया। टाइम्स ऑफ इण्डिया जो कि १८६१ में बम्बई के समाचार पत्रों का विलय करके निकाला गया। इसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश हितों की रक्षा करना था। बीसवां सदी में तिलक, गोखले, दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, मदनमोहन मालवीय और रवीन्द्रनाथ ठाकुर के नेतृत्व में समाचार पत्र और पत्रिका का प्रकाशन हुआ। हिन्दी भाषा का पहला समाचार पत्र कलकत्ता से १८२६ में जुगल किशोर शुक्ल ने प्रकाशित किया। यहीं से हिन्दी प्रेस का आरंभ हुआ। इसी दौरान उर्दू भाषा में अब्दुल कलाम आजाद ने अल-हिलाल और अल-बिलाग़ का प्रकाशन शुरू किया जिससे उर्दू प्रेस की नींव पड़ी।

इसके उपरान्त ब्रिटिश प्रशासन ने १९२४ में मद्रास में एक शौकिया रेडियो क्लब बनाने की अनुमति दी। तीन साल बाद नीजि क्षेत्र में ब्रॉडकास्ट कम्पनी ने मुम्बई और कोलकाता में नियमित रेडियो प्रसारण प्रारंभ किया तथा इसके साथ ही शौकिया रेडियो क्लब भी चलते रहे। इसके बाद ब्रिटिश सरकार ने १९३० में पूर्णतया ब्रॉडकॉस्टिंग को अपने अधीन ले लिया और १९३६ में ब्रॉडकास्ट कम्पनी का परिवर्तित करके ''ऑल इण्डिया रेडियो'' कर दिया। इसके पश्चात हैदराबाद, त्रावणकोर, मैसूर, त्रिवेन्द्रम और औरंगाबाद से भी रेडियो प्रसारण प्रारंभ किया गया।

१५ अगस्त १९४७ मे जैसे ही सत्ता का परिवर्तन हुआ वैसे ही मीडिया ने राजनीतिक नेतृत्व के साथ आधुनिक भारतीय राष्ट्र का निर्माण करना प्रारंभ कर दिया। मीडिया के विकास का यह दौर अस्सी के दशक तक यूहीं जारी रहा। इस दौर के कुछ उल्लेखनिय आयाम भी रहे जिसमें .....

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए पडने वाले सरकारी दबाबी कोशिशों के खिलाफ संघर्ष तथा समाज में एकजुटता। भारतीय समाज में राष्ट्रहित की भावना जागृत होना, राष्ट्रहित के आधार पर आधुनिक भारत के निर्माण में सचेत तथा सतर्क योजना में भागीदारी तथा एकजुटता, भाषाई पत्रकारिता द्वारा अपने महत्व तथा श्रेष्ठता को स्थापित करते हुए जन जन तक विचार अभिव्यक्ति, विविधता तथा प्रसार की उपलब्धि तथा विकास, सरकारी नियत्रंण से प्रसारण मीडिया को एक सीमा तक मुक्ति।

१९५२ एवं १९७७ मे दो प्रेस आयोग का गठन किया गया जिसका उद्देश्य प्रेस के कार्यकलाप को सुचारू रूप करना है। इसके साथ ही संविधान के अतंर्गत १९६५ में प्रेस परिषद की स्थापना की गई। वहीं १९६५ में ''रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक्स एक्ट'' के अंतर्गत प्रेस रजिस्ट्रार ऑफ इण्डिया की स्थापना हुई। इसके बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अमेरिका के उपग्रह द्वारा सन् १९७५ - १९७६ में देश के विभिन्न हिस्सों में २४०० गांवों में दूरदर्शन का प्रसारण किया। इसे सेटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरीमेंट कहा गया। इस प्रसारण से देश में विभिन्न भाषाओं में टीवी कार्यक्रमों के निर्माण और प्रसारण की संभावनाओं को सफलता मिली। १९८२ में दिल्ली एशियाड के प्रसारण के दौरान रंगीन टीवी कार्यक्रम का प्रसारण प्रारंभ हुआ। जिससे टीवी के प्रचार प्रसार को गति मिली।

१९९० तक ट्रांसमीटरों की संख्या ५१९ और १९९७ तक ९०० हो गई। नब्बे के दशक में भारतीय मीडिया में क्रांतिकारी बदलाव आये। जिसका मुख्य आधार १९९०-१९९१ में अपनाये गये भूमण्डलीकरण है। इसी दोरान सरकार द्वारा प्रसारण के क्षेत्र में ''खुला आकाश'' की नीति अपनानी प्रारंभ की। इसी नीति के आधार पर प्रसार भारती निगम बना कर आकाशवाणी और दूरदर्शन को स्वायत्तता प्रदान की। साथ ही निजी पुंजी और विदेशी पूंजी को प्रसारण के क्षेत्र में आने की अनुमति दी।

प्रिन्ट मीडिया में विदेशी पूंजी को प्रवेश करने का अवसर मिला। इक्कीसवीं सदी के आरंभ होने के साथ ही प्रिन्ट मीडिया में एक बडे

पैमाने पर बदलाव आया और बदलाव था कि प्रिन्ट मीडिया अब पहले की तरह सिंगल सेक्टर मतलब मुद्रण प्रधान नहीं रह कर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा वेब की ओर भी अग्रसर हुआ। वर्तमान में कई प्रिन्ट मीडिया के अपने इलेक्ट्रॉनिक चैनल्स तथा वेव पृष्ठ देखे जा सकते है। इसके साथ ही उपभोक्ता क्रांति आई है। जिससे विज्ञापनों द्वारा होने वाली आमदनी में कई गुना वृद्धि हुई हैं। इस उपलब्ध आमदनी से प्रत्येक प्रकार के मीडिया विस्तार की संभावनाएं ओर अधिक तीव्र हुई है। सेटेलाइट टीवी केबल टीवी के माध्यम से दर्शकों तक पहुचा जो प्रौघोगिकी तथा उद्यमशीलता का एक बहुत बड़ा पथ प्रदर्शक था।

इसके उपरान्त डीटीएच प्रौद्योगिकी आने से समाचार प्रसारण तथा मनोरंजन की दुनिया ही बदल गई। साथ ही साथ एफएम रेडियो चैनल्स आने से रेडियो माध्यम पहले से कई गुना ओर अधिक शक्तिशाली हो गया। वहीं १९९५ में भारत में इंटरनेट की शुरूआत हुई और इक्कीसवीं सदी के पहले दशक के अंत तक बड़ी संख्या में लोगों के निजी और व्यवसायिक जीवन का एक अहम पहलू नेट के माध्यम से संचालित होने लगा। वर्तमान समय में हाथों में थमें मोबाइल फोन के द्वारा नयी मीडिया प्रौद्योगिकी ने अपने उपभोक्ताओं को कन्वर्जेस का उपहार दे दिया।

इन सभी पहलुओं ने मीडिया के आकार को विस्तृत के साथ साथ विविध बना दिया। इसके आगोश में सार्वजनिक जीवन के आयाम जुड़ने लगे। जिसे ''मीडिया स्फेयर'' जैसी स्थिति का नाम दिया गया और रियूतर, सीएनएन, बीबीसी जैसे विदेशी मीडिया संगठन भारतीय स्फेयर की तरफ आकर्षित होने लगे। १९९५ से ९८ के दौरान सरकारी संस्था ''विदेशी संचार निगम लिमिटेड '' (वीएसएनयएल) के माध्यम से ही इंटरनेट सेवाएं दी जाती थी। यह संस्था इंटरनेशनल टेलिकम्युनिकेशन गेटवेज़ के माध्यम से काम करती थी। दिसम्बर १९९८ में दूरसंचार विभाग ने बीस प्राइवेट ऑपरेटरो को आईएसपी लाइसेंस प्रदान करके इस क्षेत्र का निजीकरण कर दिया। बीएसएनएल ने अपना शुल्क जैसे जैसे कम किया वैसे वैसे इंटरनेट सेवाएं सस्ती होने लगी। जिसके परिणामस्वरूप देश भर में इंटरनेट कैफे दिखने लगे तथा पर्सनल कम्युटरो की संख्या के साथ इंटरनेट यूजर्स की संख्या तेजी से बढ़ी।

ई – कॉमर्स की भूमी तैयार होने लगी और बैंको द्वारा भी इसे प्रोत्साहित किया गया। वर्तमान में प्रमुख समाचार पत्रों तथा इलेक्ट्रॉनिक चैनल्स के ऑनलाइन संस्करण भी देखे जा सकते है। विज्ञापन एंजेनसियां भी अपने उत्पादों को नेट पर बेचने लगी। नेट ने व्यक्तिगत जीवन की गुणवत्ता को एक नये रूप में प्रस्तुत किया है।

सामाजिक परिवर्तन परिवर्तन प्रकृति का नियम है (Change is the law of nature)। यदि किसी समाज के संदर्भ में बात कि जाये तो किसी भी समाज में परिवर्तन होना उस समाज का जीवंत होना सिद्ध करता है। इसलिए समाज में परिवर्तन जीवंत समाज में निरंतर गतिशील रहता है और यह परिवर्तन उसके बाह्य एवं आंतरिक दोनों स्वरूपों में होता है। भारतीय समाज में संचार माध्यम का प्रभाव किसी न किसी रूप में अनादिकाल से रहा है। मीडिया केवल व्यक्ति विशेष के जीवन को प्रभावित नहीं करता वरन् यह समाज राष्ट्र तथा विश्व में नैतिकता का निर्माण करने में अहम भूमिका निभाता है। परंपरागत एवं आधुनिक संचार माध्यम सदैव ही समाज की सामाजिक संरचना में परिवर्तन एवं विकास से जुडे हुए है। एच एम जॉनसन (H.M. Johnson) ने सामाजिक परिवर्तन को बहुत ही संक्षिप्त एवं अर्थपूर्ण शब्दों में स्पष्ट करते हुए बताया कि मूल अर्थों में सामाजिक परिवर्तन का अर्थ संरचनात्मक परिवर्तन है। जॉनसन की तरह गिडेन्स ने बताया है कि सामाजिक परिवर्तन का अर्थ बुनियादी संरचना (Underlying Structure) या बुनियादी संस्था (Basic institutions) में परिवर्तन से है।

यदि हम वैश्विक आधार पर देखे तो लगभग विगत पन्द्रह बीस सालों से संसार के प्रत्येक क्षेत्र में विकास हुआ है तथा सभी विकास के साथ सहज ही कदम दर कदम दर चलते हुए विकास को अपनी व्यवहारिक संस्कृति में अपनाया हैं। यही विकास किसी समाज के सामाजिक परिवर्तनों में परिलक्षित होता हैं। यह परिवर्तन परिस्थति अनुसार कभी तेज तो कभी धीमी गति से गतिमान रहे। इनकी गति चाहे कैसी भी रही हो परंतु इससे समाज में नयी कार्यप्रणाली एवं संरचना का अभ्युदय सदैव होता रहा है।

समाज में होने वाले ये परिवर्तन कभी कल्पना से परे यकायक तो कभी ऐसे परिवर्तन जो कहीं न कहीं कभी न कभी समाज में संभवता होने वाले ही है। संभवता होने वाले इन परिवर्तनों को तो समाज स्वीकार कर लेता है। परंतु कुछ परिवर्तनों से तालमेल बैठाने में कठिन है। जैसा कि आर एम मकीवर एवं पेज (R. M. Maclver) ने अपनी पुस्तक सोसायटी (Society) में सामाजिक परिवर्तन को स्पष्ट करते हुए बताया है कि ''हमारा प्रत्यक्ष संबंध सामाजिक संबंधों से है और उसमें आए हुए परिवर्तन को हम सामाजिक परिवर्तन कहेंगे।''

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत में सामाजिक परिर्वतनों का दौर तेजी चल पड़ा और परिर्वतन मनुष्य के आचार व्यवहार में ही नही वरन् उसकी संपूर्ण जीवन की जीवन पद्धति तक में हुआ है। सामाजिक दृष्टि से देखे तो यह परिवर्तन की आंधी सिनेमा में मल्टीप्लेक्स, आर्थिक रूप से उपभोक्तावादी, शैक्षिणिक रूप से आई आई टी का और मीडिया के संदर्भ में सोशल मीडिया के युग के रूप में देखी जा सकती है। वर्तमान में सर्वाधिक परिवर्तन सूचना में हुआ है। जिसमें सोशल मीडिया और इन्टरनेट की महत्वपूर्ण भूमिका है।

यदि नब्बे के दशक के पूर्व नजर दौड़ाएं तो प्रतीत होता है कि संचार का विकास तो हो रहा था परंतु उसकी गति कम थी तथा भारतीय परिवेश में भी खेती आधारित जीवन के साथ औद्योगिकरण भी आ चुका था। जिससे व्यवहारिक आधार पर काफी परिवर्तन देखे जा सकते थे। मसलन जहां वर्किंग स्टाइल सुबह से केवल शाम तक ही सीमित थी वहीं यह चौबिस घंटों में तब्दील हो गयी। जिससे पारिवारिक विघटन भी शुरू हो गया तथा अंतरव्यक्ति संचार पूर्व की अपेक्षा कम होने लगा। धीरे-धीरे लोगों का सूचना स्त्रोत का मुख्य आधार मास मीडिया हो गया। जिससे समाज में कहीं न कहीं पारिवारिक एवं व्यहारिक आधारों पर कुछ दूरियां होने लगी तथा पारिवारिक सूचना स्त्रोत में केवल पत्र संचार एवं टेलीफोनिक संचार तक ही सीमित था। परंतु वर्तमान में ई मीडिया तथा सोशल मीडिया आने से लागों की संपूर्ण कार्यपद्यति में बदलाव आ गया जहां लोग दूर दराज के संबंधियों से बात करने के लिए पत्राचार तथा टेलीफोन का सहारा लेते थे। वहीं इन संचार साधनों का रूप सोशल मीडिया तथा मोबाइल फोन्स ने ले लिया है। आधुनिक दौर में लोग हर एक छोटी बड़ी खबरों से वाखिफ रहते है। चाहे वह अंतर्राष्ट्रीय हो राष्ट्रीय हो, क्षेत्रिय हो या फिर स्थानीय क्यों न हो । यहां तक की हमारे आस पास से लेकर दूर दराज बैठे सगे संबंधियों से सुबह गुडमॉर्निंग से लेकर रात गुडनाइट तक क्यों न हो या चाहे वह देश विदेश भ्रमण से संबंधित टिकिट बुक कराने से लेकर संपूर्ण जानकारी क्यों न हो। आज भारतीय परिवेश में मास मीडिया तथा सोशल मीडिया ने जाति, धर्म, अंधविश्वास, रूढ़ियां, अमीरी-गरिबी, भेदभाव आदि समाज की कुरीतियों को खत्म कर समाज को नयी दिशा स्वयं के विकास तथा समाज एवं राष्ट्रीय विकास की ओर लोगों का ध्यान तथा मनोबल केन्द्रित किया है।

शिक्षा के क्षेत्र में तो मीडिया ने इतनी सरलता स्थापित कर दी है कि आज किसी भी प्रकार की प्रतियोगिता में हिस्सा लेना हो या देशी-विदेशी शिक्षण संस्थान के बारे में ही क्यों नही जानना हो, यह सब ई-मीडिया में बड़ी आसानी से उपलब्ध है। भविष्य के लिए कोई अच्छा केरियर चुनना है तो उससे संबंधित तैयारी किस प्रकार पहले से करें यह सब भी ई-मीडिया ने आसान कर दिया है। इसी के साथ प्रिंट तथा

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा भी अपने आर्टीकल तथा समाचार द्वारा शिक्षा से संबंधित जानकारी विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित विशेषज्ञों से समय समय पर सूचना तथा वार्तालाप द्वारा संपूर्ण जानकारी दी जाती है। राजीव गांधी ने २१वीं सदी को युवाओं का युग कहा था।

इसी प्रकार नारी शिक्षा, नारी सशक्तिकरण ओर अधिक प्रोत्साहित हुई है। जहां भारतीय नारी घरों तक सीमित थी वहीं वह आज समाज के हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व पूरी ईमानदारी के साथ निभा रही है। ई-मीडिया तथा मास मीडिया का विस्तार होने के साथ ही समाज में कई प्रकार के अवसरों का निर्माण होने लगा है। जहां केवल सरकारी उपक्रमों का ही वर्चस्व देखने को मिलता था वहीं वर्तमान में निजी क्षेत्रों में बड़े बड़े उपक्रमों का विकास तथा विस्तार हो रहा है। इस विकास तथा विस्तार के साथ ही नये नये अवसरों का भी विकास हुआ है। जिससे एक आम आदमी अपनी जीवन शैली को बड़ी सहजता से व्यापन कर रहा है। इन क्षेत्रों में उपलब्ध अवसरों तथा इन सभी क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी आज लागों के पास ई-मीडिया के माध्यम से उपलब्ध है।

राजनीति में हो रही उठा पटक, किसने क्या काम किया, कैसा किया विदेशी संबंध कैसे है, आंतकवाद पर कैसे रोक लगे इस विचार को स्थापित करना और उसे बनाना तथा जन-जन मे से एक-एक जन की आवाज भी हमें मीडिया ने ही दी है।

मनोरंजन का क्षेत्र भी पहले से अधिक विस्तृत हो गया है कहीं पर किसी समय भी अपने मन माफिक मनोरंजन का आनंद उठा सकते है। उससे संबंधित पूर्व-वर्तमान तथा कई अन्य जानकारी भी प्राप्त कर सकते है। वर्तमान में किसी फिल्म या मनोरंजन से संबंधित क्षेत्रिय किसी भी सूचना या प्रमोशन के लिए मास मीडिया का ही अधिक प्रयोग किया जाता है। मनोरंजन के संसाधनों के कारण वर्तमान में छोटे-छोटे क्षेत्रों मे पनप रही बड़ी-बड़ी प्रतिभा भी हमें मास एवं सोशल मीडिया के द्वारा देखने को मिलती है। ऐसी प्रतिभा को देखकर हम दंग रह जाते है कि यह प्रतिभा अभी तक कहां थी और यदि यह संसाधन नहीं होते तो यह वहीं उसी क्षेत्र में सीमटकर रह जाती। हमें हमारी लोक तथा पारंपरिक संस्कृति से परिचित ही इस तरह नहीं हो पाते। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का वक्तव्य सटीक है ''सोशल मीडिया नहीं होता तो हिन्दुस्तान की क्रियेटिविटी का पता ही नहीं चलता।''

जहां हम १५-२० साल पहले तक एक सीमा तक बंधे थे वहीं अब हमारे आस- पास क्या घटित हो रहा है के साथ साथ विश्व स्तर पर क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है हमारी क्या भूमिका है क्या अच्छा-बुरा है उसका वर्तमान भूत तथा भविष्य यह सब जानने के लिए ओर अधिक उत्सुक है। मास मीडिया तथा सोशल मीडिया ने हमारी जीवन शैली, खान-पान, रहन-सहन, विचार-व्यवहार, तौर-तरीके इन सब को बदल दिया जिससे उपभोक्ताओं को प्रोत्साहन मिला तथा ई-शॉपिंग का बाज़ार देश विदेश में फली फूलित होने लगा। जिसने भूमंडलीकरण को प्रोत्साहित किया है।

तृतीय अध्याय

शोध कियाविधि :– प्रथम अध्याय बताता है कि इस शोध की आवश्यकता क्यों पड़ी वहीं दूसरा अध्याय में मीडिया का विकास तथा उसके द्वारा हो रहे सामाजिक परिवर्तन पर प्रकाश डाला है।

शोध पद्धति :– इसमें नमूना पद्धति में प्रश्नावली तकनीकी का प्रयोग कर १५ प्रश्नों के माध्यम से ५० लोगों को जिसमें पुरूष-महिलाएं, युवा तथा विद्यार्थियों, घरेलु एवं बिजनेस संबंधित महिला एवं पुरूष एवं ५० वर्ष से अधिक आयु के लोगों लिया गया है जिनसे प्रश्नोत्तरी के माध्यम से तथ्य का संग्रह किया गया है।

प्रश्नावली

1.कौन-कौन से जनसंचार संसाधनों का उपयोग करते है–

(a)समाचार पत्र-पत्रिका
(b)इलेक्ट्रॉनिक मीडिया
(c)ई मीडिया
(d)सभी
(e)अन्य

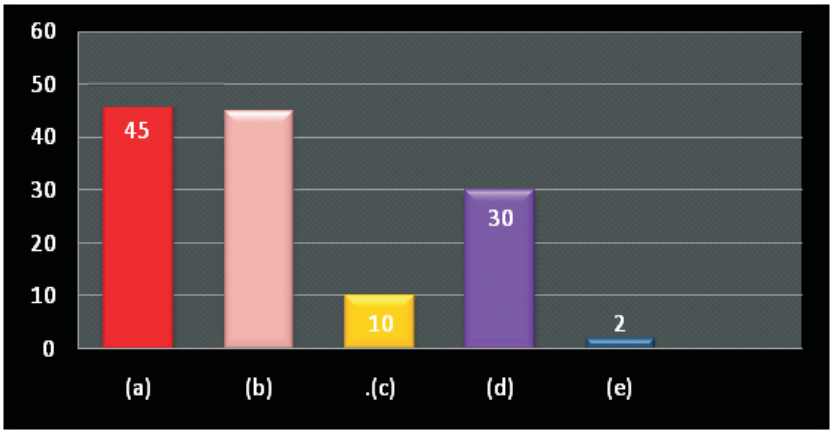

2.जनसंचार से आप क्या समझते है–

(a)नागरिक पत्रकारिता

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

(b)विकासात्मक समाचार
(c)मुख्यधारा के मीडिया के संदर्भ में समाचार देने वाला
(d)विज्ञापन रहित माडिया
(e)सभी
(f)अन्य

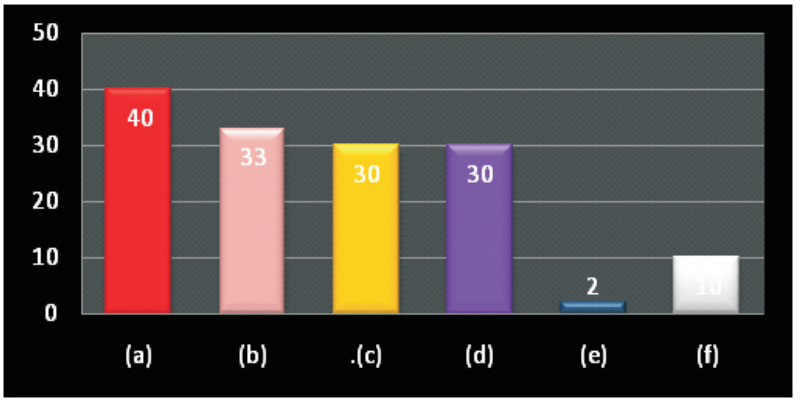

3.वर्तमान में जनसंचार की भूमिका है–
(a)सकारात्मक
(b)नकारात्मक
(c)सामान्य
(d)अन्य

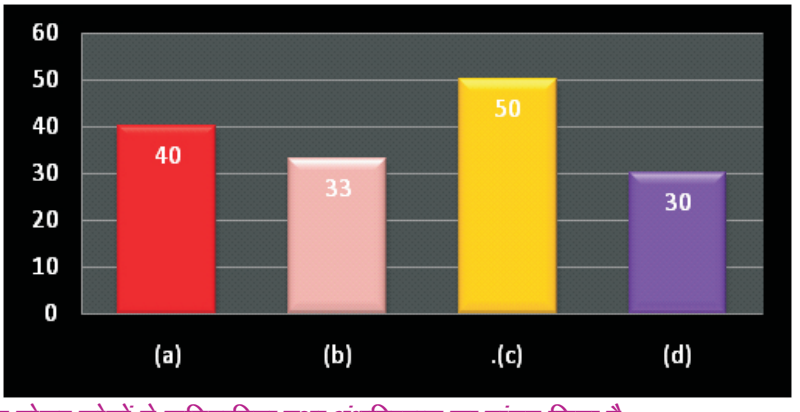

4.जनसंचार के द्वारा जागरूक होकर लोगों ने रूढ़िवादिता तथा अंधविश्वास का खंडन किया है–
(a)हां
(b)नहीं
(c)अंशतः
(d)अन्य

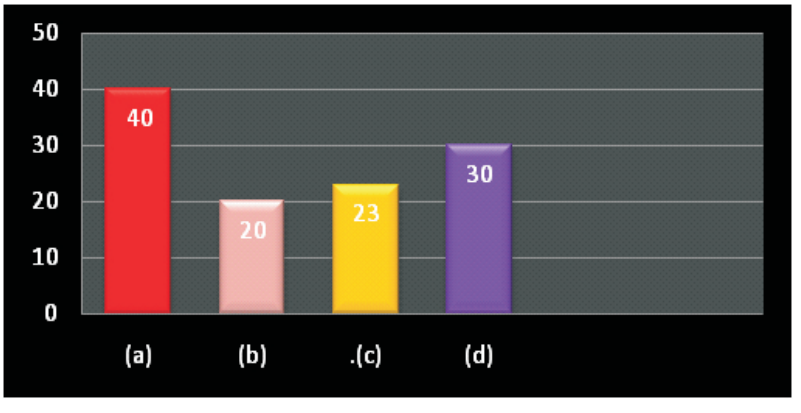

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

5.वर्तमान में जनसंचार द्वारा लोगों में अधिकारों के प्रति जागरूकता का स्तर –

(a)बहुत बढ़ा है
(b)अंशतः बढ़ा है
(c)सामान्य है
(d)अन्य

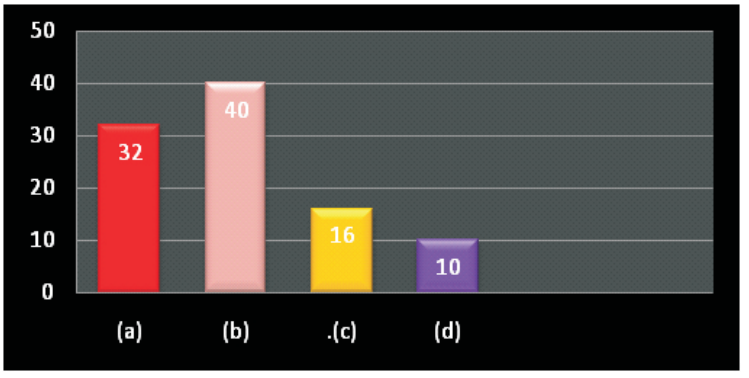

6.जनसंचार के माध्यम से महिलाओं की जागरूकता तथा समाज में उनके प्रति व्यवहार में परिवर्तन हुआ है–

(a)हां
(b)नहीं
(c)कुछ–कुछ
(d)अन्य

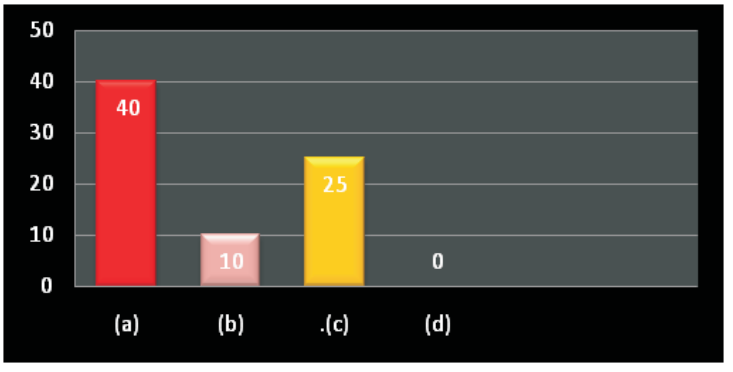

7.सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन में जनसंचार की भूमिका है–

(a)नकारात्मक
(b)सामान्य
(c)सकारात्मक
(d)अन्य

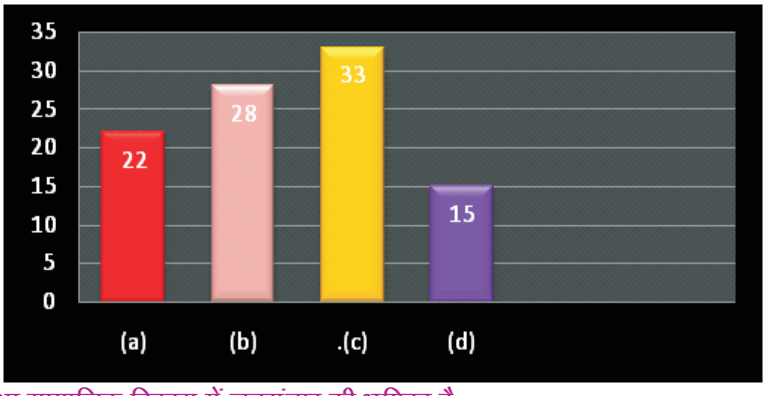

8.शिक्षा के प्रति जागरूकता तथा सामाजिक विकास में जनसंचार की भूमिका है–

(a)सकारात्मक
(b)नकारात्मक
(c)सामान्य
(d)कह नही सकते

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

(e)अन्य

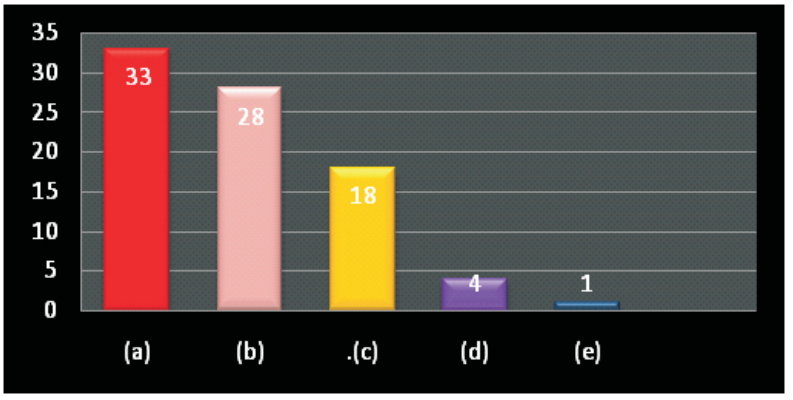

9.समाजिक उत्थान में जनसंचार की भूमिका है–

(a)सकारात्मक
(b)सामान्य
(c)नकारात्मक
(d)कह नही सकते
(e)अन्य

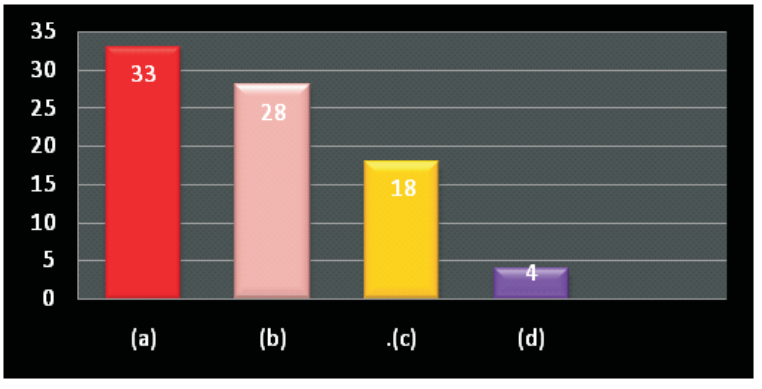

10.जनसंचार ने जनसामान्य को राजनैतिक व्यवस्था में हस्तक्षेप के लिए प्रेरित किया है–

(a)हां
(b)नहीं
(c)अंशतः
(d)अन्य

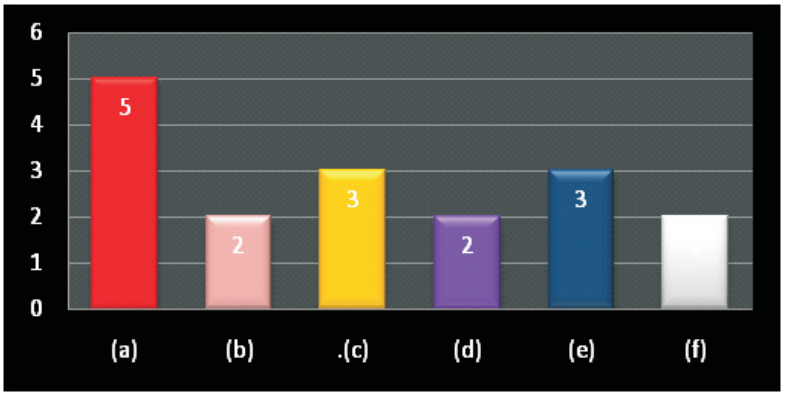

11.वर्तमान में जनसंचार ने मुख्य माध्यम के समान ही अपना वर्चस्व बना लिया है–

(a)हां
(b)अंशतः
(c)नहीं
(d)अन्य

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

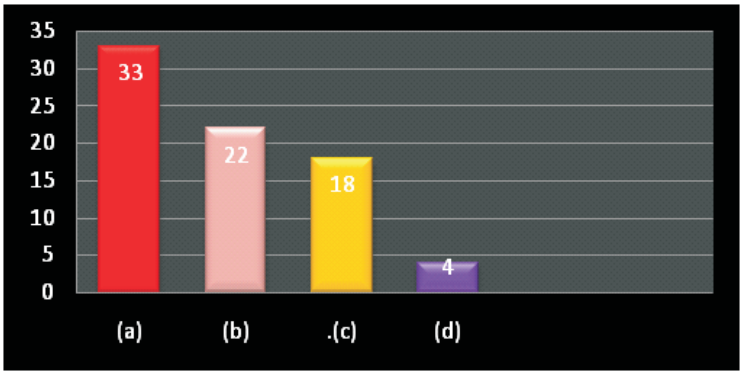

12.जनसामान्य जनसंचार से लाभान्वित हुआ है–

(a)हां
(b)अंशतः
(c)नहीं
(d)अन्य

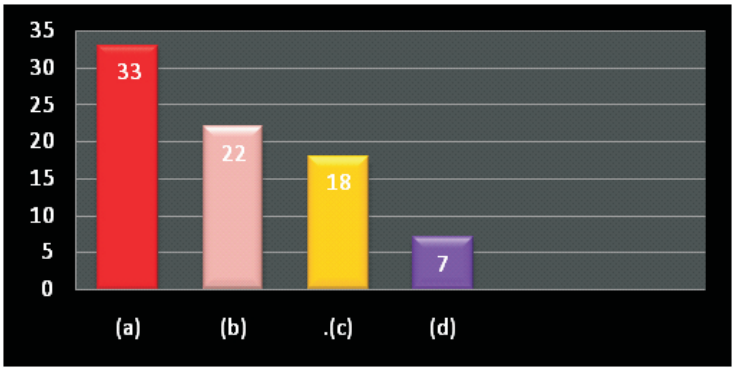

13. सामाजिक मूल्यों की रक्षा करने के लिए जनसंचार कारगर माध्यम है–

(a)हां
(b)नहीं
(c)अंशतः
(d)कह नहीं सकते
(e)अन्य

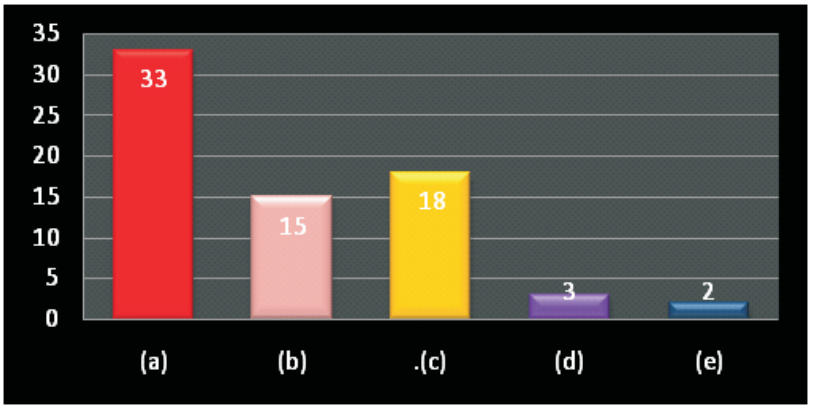

14. जनसंचार माध्यम के विकास ने विश्व को एक केन्द्र में समेट दिया है–

(a)हां
(b)नहीं
(c)अंशतः

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

(d)कह नही सकते
(e)अन्य

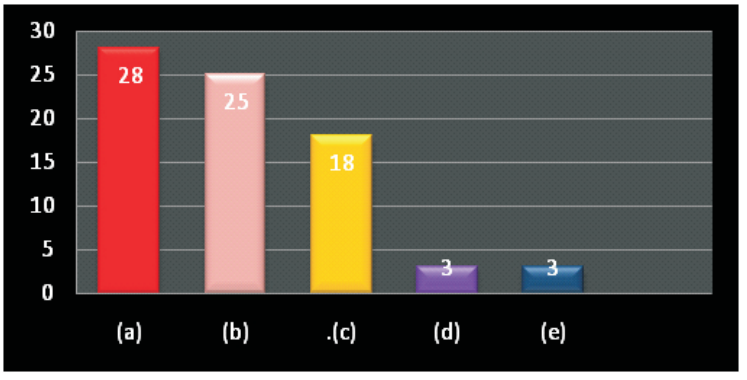

15. जनसंचार ने वर्तमान में जीवन शैली को सरल एवं सहज कर दिया है–

(a)हां
(b)नहीं
(c)अंशतः
(d)अन्य

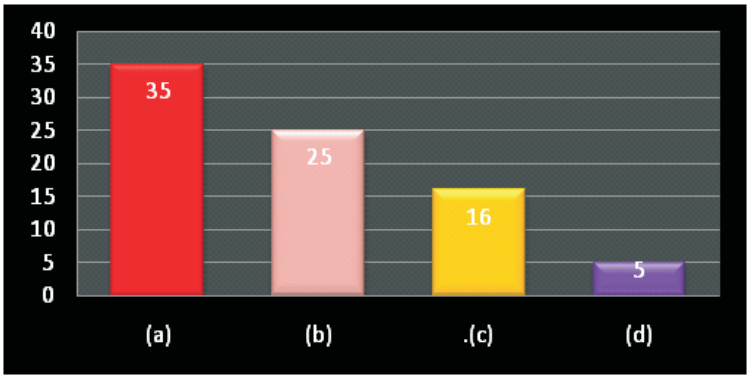

चतुर्थ अध्याय

उपसंहार :– भारतीय परिवेश में मानसिक तथा व्यवहारिक रूप में खुलापन और बदलाव केवल मेट्रो सिटी और शहर ही नहीं है बल्कि यह परिवर्तन की लहरें ग्रामीण अंचलों में भी दिखाई देने लगी है। आज सूचना संवाद को निरंतर समय से पार और लगातार बना दिया है। सूचनाएं आज मुक्त है। सूचना के क्षेत्र में आये इस परिवर्तन ने एक छोटे क्षेत्र से लेकर संपूर्ण विश्व को केन्द्र में ला खड़ा कर दिया हैं।

एक तरह से आज संपूर्ण सूचनाएं हर आम व्यक्ति के पास उसकी मुट्ठी में बंद मोबाईल पर उपलब्ध है। सोशल मीडिया के इस दौर में प्रिंट मीडिया भी पीछे नहीं है। उसने भी समय के साथ नयी तकनिकों को अपना कर अपना प्रभुत्व स्थापित किया हुआ है। आज यदि आधी रात में भी विश्व में तो क्या किसी छोटे क्षेत्र में भी कोई घटना घटती है तो वह हमें सुबह समाचार पत्रों में सविस्तार जानकारी के साथ उपलब्ध मिलेगी और फिर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तो चौबिस घंटे हमें संपूर्ण सविस्तारित सूचना देने वाला संसाधन तो है ही।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

''संचार क्रान्ति और विश्व जनमाध्यम'' (२००३) – डॉ. प्रेमचन्द पातंजलि कुलपति ''वीर बहादुर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर एवं डॉ. अनिल अंकित समन्वयक एवं प्रभारी जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग ''वीर बहादुर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर ISBN : ८१.७६७८.०५६.०

''जनसंचार एवं समाज '' (२००५) डॉ. मोनिका नागोरी ISBN : ८१.८६०६४.४७.८

एम एन श्रीनिवास ''आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन '',

जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग – विष्णु राजगढ़िया

विकीपीडिया डॉट ओआरजी , डबल्यू डबल्यू डबल्यू समयलाइन डॉट कॉम

रचना सक्सेना (कुलश्रेष्ठ)
सहायक प्रोफेसर , पीपल्स पत्रकारिता शिक्षण संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org